आई . बी . स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जी.टी. रोड, पानीपत-132103, हरियाणा

A Premier co-educational institute | affil. To Kurukshetra University, Kurukshetra

☎0180-2636700, 2638259

Website : ibpgcollegepanipat.com, Email: principalibcollege@gmail.com

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

ऑनलाइन राष्ट्र स्तरीय निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

विषय

- कोविड 19 के संकट काल में ई-कक्षाओं का महत्त्व ।
- कोविड 19 समाजिक और शैक्षणिक परि प्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की भूमिका ।
- लॉक डाउन और विद्यार्थी जीवन ।

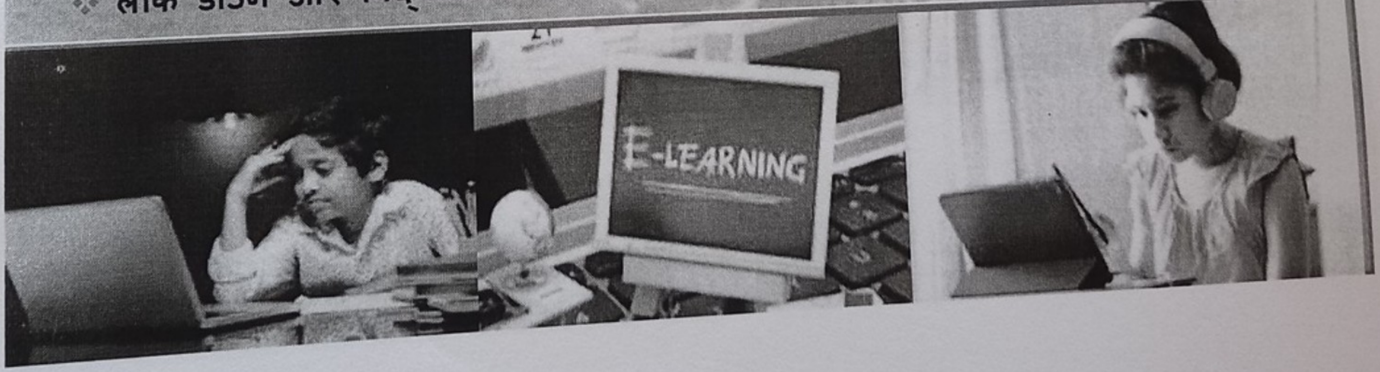

नियम/शर्तें

- निबंन्ध की भाषा हिंदी होनी चाहिए ।
- निबंन्ध विषय से सम्बंधित एवं मौलिक होना चाहिए ।
- निबंन्ध केवल हस्तलिखित ही अपेक्षित है ।
- निबंन्ध में शब्दों के अधिकतम संख्या केवल आठ सौ (800) तक होनी चाहिए ।
- प्रत्येक महाविद्यालय से केवल 2 प्रविष्टियां ही स्वीकार्य होंगी ।
- सभी प्रतिभागियों को ई -प्रमाण पत्र प्रेषित किये जायेंगे ।
- निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा ।
- निबंन्ध ईमेल: deptofhindicovid19@gmail.com पर 18 मई 2020 तक भेजे।

निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कार:

प्रथम पुरस्कार	– Rs. 500/-
दवितीय पुरस्कार	– Rs. 300/-
तृतीय पुरस्कार	– Rs. 200/-
दो सांत्वना पुरस्कार	- Rs. 100/-

ई-प्रमाणपत्र

कोविड-19 के दौरान कोरोना योद्धाओं की भूमिका

भूमिका

वर्तमान समय में न केवल भारत बल्कि पूरा विश्व 'कोरोना' जैसी भयंकर महामारी से जूझ रहा है। इस बीमारी से निपटने के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने स्तर पर कोशिश करता नजर आ रहा है। सरकार द्वारा भी कोरोना वायरस को रोकने के लिए अनेक कदम उठाए गए। लॉकडाउन के चलते सभी लोग अपने-अपने घरों में बैठने के लिए विवश हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अपनी जान को जोखिम में डालकर इस महामारी के समय में भी देश हित के लिए कार्यरत हैं। इस संकट के समय में भी कुछ लोग हमारे लिए अपने-अपने घरों को छोड़कर निकले हैं। आने वाले समय में अगर हम इस महामारी से छुटकारा पा लेते हैं तो इसमें सबसे बड़ा योगदान हमारे कोरोना योद्धाओं का होगा। इस महामारी के समय में चिकित्सक, सफाई कर्मचारी, पुलिस, गरीबों को खाना व राशन वितरित करने वाले, शिक्षक। ये सभी अपनी जान की परवाह न करते हुए प्रतिदिन अपने घरों से देश के लोगों की सेवा करने के लिए निकलते हैं। ऐसी संकटकाल की स्थिति में इनका हमारे लिये इस प्रकार कार्य करना हमारी नजरों में इनका स्थान और भी ऊँचा कर देता है। आज लॉकडाउन का असर प्रत्येक वर्ग पर देखने को मिलता है लेकिन जहां आम लोग अपने घरों में सुरक्षित हैं तो उसका श्रेय कहीं न कहीं कोरोना योद्धाओं को ही जाता है। जो दिन रात लोगों की सुरक्षा में लगे रहते हैं। जितने भी लोगों को हम अपने आस-पास इस संकटकाल की घड़ी में कार्य करते देखते हैं, चाहे पुलिस हो, चिकित्सक हो, या सफाई कर्मचारी हो, इनके भी घर-परिवार हैं और ना जाने कितने ही दिनों से ये लोग अपने परिवार से दूर हैं। हमें इनका आभार मानना चाहिए जिनकी वजह से हम आज अपने घरों में सुरक्षित हैं। देशवासियों पर इनका ऐसा एहसान है जिसका कर्ज अदा करना भी मुश्किल है। हम अच्छे से जानते हैं कि जब देश में लॉकडाउन का एलान किया गया तो प्रवासी मजदूरों के लिए कितनी बड़ी समस्या खड़ी हुई। देश में लॉकडाउन की वजह से न तो लोग अपने घरों में पहुंच पा रहे थे और न ही उनकी कमाई का साधन रह गया था। ऐसे में जब सब कुछ स्थगित हो गया था तब समाज में जो लोग इनकी मदद के लिए सामने आए वो किसी मसीहा से कम नहीं थे। समय-समय पर आकर लोगों ने इनकी मदद की, राशन वितरित किया। ऐसे लोगों का एहसान कभी चुकता नहीं किया जा सकता जिन लोगों ने भुखमरी की वजह से किसी की जान नहीं जाने दी। अगर ये लोग मदद के लिए सामने न आते तो आज स्थिति बहुत ही भयानक होती और भुखमरी की खबरें समाचार बनती। इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग की यदि बात करें तो इस विभाग का छोटे से लेकर बड़ा कर्मचारी इस संकट की स्थिति में जिस तरह से लड़ रहा है और अपनी जान को खतरे में

तकर भारतवासियों की सेवा कर रहा है। डॉक्टर्स जो दिन रात मरीजों को ठीक करने लगे हुए हैं, इनका एहसान कभी भुलाया नहीं जा सकता। इस संकटकाल की घड़ी इनकी भूमिका सर्वोपरि है। कोरोना वायरस का सबसे ज्यादा खतरा डॉक्टर्स को है लेकिन अपनी परवाह न करते हुए ये सभी अपने कर्तव्यों को पूरा करने में लगे । लॉकडाउन में जब सब अपने-अपने घरों में हैं तो भी सफाई कर्मचारी अपना र्तव्य निभा रहे हैं। सुरक्षा की दृष्टि से यदि देखा जाए तो ऐसे कई महकमे हैं, जहाँ रकार के द्वारा कोई भी सुरक्षा उपकरण मुहैया नहीं कराया गया। देश में कई सी समाज सेवी संस्थाएं इन लोगों की मदद करने के लिए सामने आई। उन्हें ास्क वितरित किए गए। कोरोना वायरस का सबसे अधिक प्रभाव गरीब लोगों र ही पड़ा है इसके अलावा मध्यम वर्ग भी इससे कम अछूता नहीं है। हमारा पुलिस शासन जो लोगों की नजरों में अक्सर बुरा ही रहा है। आज इस संकट के समय में पुलिस महकमे ने जो कार्य किया है उसे शब्दों में बयां करना बहुत मुश्किल है। हम देखते हैं कि समाज में ऐसे लोग भी हैं जो किसी का भी कहना नहीं मानते या कोरोना जैसी भयंकर महामारी को गंभीरता से नहीं लेते ऐसे लोगों के लिए ही पुलिस को अपना सख्त रवैया अपनाना पड़ता है। इस समय पुलिस जिस लगन और मेहनत से कार्य कर रही है उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम ही है। इसके अलावा सरकारी विद्यालयों के शिक्षक भी कोरोना योद्धा के रूप में अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। इस समय जहां सभी स्कूल, कॉलेज लॉकडाउन की वजह से बंद पड़े हैं, तो अध्यापकों द्वारा बच्चों को ऑनलाईन पढाई करवाई जा रही है। साथ ही गरीब परिवारों की पहचान करके 'हाउस होल्ड सर्वे' के अंतर्गत उनकी सारी रिपॉर्ट सरकार तक पहुंचा रहे हैं ताकि सरकार गरीबों तक राशन पहुंचा सके। सरकार द्वारा भेजे गए राशन को शिक्षकों के द्वारा ही घर-घर तक पहुंचाया जा रहा है, प्रतिदिन इस कोरोना वायरस जैसी भयंकर बीमारी में अपनी जान हथेली पर रखकर तो ये लोग भी निकलते हैं, फिर भी इनका नाम किसी की जुबान पर नहीं आता। बैंक कर्मी जो इस समय लोगों की मदद कर रहे हैं किसी योद्धा से कम नहीं हैं ऐसे मुश्किल समय में भी ये लोग अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। भारत सरकार के साथ-साथ राज्य सरकारें भी इस समय अपना पूर्ण सहयोग दे रही हैं। सही समय पर सही फैसला लेकर लोगों तक अपनी सेवाएं पहुंचा रही हैं। कोरोना वायरस से निजात पाने का फिलहाल एक ही रास्ता है 'सामाजिक दूरी बनाये रखना' यह केवल कोरोना योद्धाओं का ही उत्तरदायित्व नहीं है, कि हम सभी की सुरक्षा करें बल्कि यह हमारा भी कर्तव्य बनता है कि अपने आप को स्वस्थ रखकर, अपने आस-पास सफाई

रखकर हम उनकी मदद कर सकते हैं। हमे चाहिए कि हम उनका हौसला बढ़ायें। क्योंकि ये सभी निस्वार्थ भाव से जनता की सेवा में लगे हुए हैं। इसके साथ ही मीडिया जिसने देश के कोने-कोने की खबर लोगों तक पहुंचाई। हर नागरिक को कोरोना वायरस से बचने की जानकारी पहुंचाई समय-समय पर जीवन व मृत्यु दर के आंकडे सबके सामने प्रस्तुत किये। कोरोना से लड़ रहे कोरोना योद्धाओं को न तो अपनी चिंता है ना ही परिवार से दूर रहने का गम। सिर्फ एक ही लक्ष्य सामने है 'कोरोना को हराना' कोरोना योद्धा अपनी छुट्टी तक भूल चुके हैं, ये कर्मचारी बिना रात-दिन देखे अपने काम कर रहे हैं। सबका एक ही कहना है 'आप घर में रहें, कोरोना से लड़ने के लिए हम हैं।'

उपसंहार केवल कोरोना योद्धाओं के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी मानवजाति के लिये यह संघर्ष का समय है। जिससे हमें केवल जीतना ही है। यह समय उन सभी लोगों का हौसला बढाने का है। जो निस्वार्थ भाव से लोगों की मदद कर रहे हैं। यह समय है एक दूसरे का सहयोग करने का, अपने कर्तव्यों को समझने का समाज के प्रति, परिवार के प्रति, अपने देश के प्रति। थोड़ी सी लापरवाही भी पूरे समाज को खतरे में डाल सकती है। इसलिये सामाजिक दूरी, संतुलित आहार उचित व्यायाम जैसी चीजों को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाकर हम इस बीमारी की जड़ को खत्म कर सकते हैं।

घर में रहें, सुरक्षित रहें, स्वस्थ रहें।

दयानन्द महिला महाविद्यालय (कुरुक्षेत्र)

नाम - संगीता
कक्षा - बी.ए. तृतीय वर्ष
अनुक्रमांक - 1531420034
पिता का नाम - श्री सतपाल सिंह

मॉबाइल नम्बर - 86078-86040
Email id - Kavyasingh9443@gmail.Com.

Page No.
Date

विषय - हिंदी
उपविषय - कोविड-19 के संकटकाल में ई-कक्षाओं का महत्व

भूमिका :- मेरी स्मृति में भारतीय जीवन, समाज, अर्थव्यवस्था और शिक्षा के क्षेत्र में अभी तक दो महत्वपूर्ण क्षण आए हैं। एक तो 1990 में उदारवादी अर्थव्यवस्था के लागू होने के बाद भारतीय जीवन में आया, गुणात्मक परिवर्तन, दूसरा 2020 में कोरोना के आने के बाद हमारे जीवन एवं समाज में एक बड़े रूपांतरण का उद्भव, पहले रूपांतरण ने जीवन में हमारी गति बढ़ाई। भूमंडलीकरण हवाई यात्राएं, साइबर स्पेस आदि विकसित हुए। दूसरे परिवर्तन ने गति को रोककर हमें स्थिर कर दिया है। कोरोना जनित यह समय असाधारण मानवीय संकट का समय है, संकट की यह घड़ी पूरी दुनिया को बदलती जा रही है।

सामाजिक जीवन, राजनीति, शिक्षा, अर्थव्यवस्था सबको इस कोरोना जनित समय के साथ खुद को समायोजित करना है इस संकट के खत्म होने के बाद भी भय, व्याकुलता, घबराहट हमारे जीवन के तत्व रूप में शामिल हो हमारे सामाजिक जीवन के मूल चरित्र में तोड़-फोड़ करते रहेंगे।

शिक्षा खासकर उच्च शिक्षा के मूल चरित्र में भी कोरोना संकट के कारण बड़े परिवर्तन की संभावना है। विश्व के अनेक बड़े देश, जहां नामी-गिरामी विश्वविद्यालय हैं, वे आमने-सामने की शिक्षा (क्लासरूम टीचिंग) के विकल्प के रूप में डिजिटल शिक्षा के नए विकल्प विकसित कर रहे हैं।

Page No. ____
Date

उन देशों मे ऑनलाइन टीचिंग के नए संस्त्रोत विकसित किए जा रहे है। अपने यहां भी मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक इस नए परिवर्तन के बारे मे बार-बार आगाह कर रहे है। वह और उनकी टीम डिजिटल शिक्षण पद्धति का एक संवादी माहौल भारतीय उच्च शिक्षा मे भी विकसित करने के लिए प्रयासरत है इस चुनौति का सामना करने के लिए हाल मे उन्होने एक नया एप 'युक्ति' लांच किया है, जिसमे हमारे नए भारत के छात्र, शोधार्थी, शिक्षक अपने ज्ञान एवं नवाचारी वृत्ति से इस कोरोना वायरस को पराजित कर सकेगे।

भारतीय उच्च शिक्षा वैसे भी 90 के दशक के बाद से ही खुद को रूपातंरित करने के काम मे लगी है। नवउदारवादी अर्थव्यवस्था एवं उसके कारण बन रहे समाज मे शिक्षा की जरूरत पूरी करने के लिए यूजीसी ई-पाठशाला, स्मार्ट क्लासरूम, ऑडियो - वीडियो और डिजिटल आधारित ओपन शिक्षा के अनेक केंद्र विकसित करने लगी थी। कोरोना संकट के समय हमारी जरूरतो ने उच्च शिक्षा-व्यवस्था के मूल ढांचे को फिर से छिन्न- भिन्न कर दिया है। चूंकि अब समाज खुद भी वर्चुअल सोशल - स्पेस मे बदलने को बाध्य है, ऐसे मे, शिक्षा मे भी क्लासरूप की अवधारणा वर्चुअल होती जाएगी। हम धीरे-धीरे एक ऐसे समाज मे बदलते जाएंगे, जहां सीधे संवाद लगभग खत्म हो जाएगा। सब कुछ वर्चुअल, आनलाइन एव डिजिटल टेक्नो संवादो के रूप मे ही रह जाएगा।

शिक्षकों के एक बड़े वर्ग को भी डिजिटल माध्यमों के नवाचारी उपयोगो मे खुद को दक्ष बनाना होगा। हमारी सरकार एवं शिक्षण संस्थाओ को भी उच्च शोध के लिए नवाचारी परियोजनाएं विकसित करनी होंगी।

इसमें धन की बड़ी समस्या होगी, क्योंकि कोरोना हमारी अर्थव्यवस्था में संकट पैदा करेगा, जो अंततः उच्च शिक्षा की हमारी गुणवत्ता को प्रभावित करेगा।

उत्तर कोरोना समय में उच्च शिक्षा की हमारी कई चुनौतियां है। ऐसे में, एक तो हमें अपनी उच्च शिक्षा के सेमेस्टर, शिक्षण, परीक्षा के कार्य, मूल्यांकन की पद्धति में नए रूपांतरण लाकर अपनी उच्च शिक्षा को इस समय में अवस्थित करना है। दूसरी, हमें दुनिया के बड़े उच्च शिक्षण संस्थाओं के समानांतर अपने को मजबूत एवं आकर्षक बनाना है। तीसरी, उच्च शिक्षा को समाहारी बनाए रखने के लिए भारतीय समाज के उपेक्षित एवं अति उपेक्षित समूह को भी इस डिजिटल रूपांतरण से जोड़ना है।

ऐसा लगता है कि भविष्य में उच्च शिक्षा में शिक्षण एवं शोध जीवंत चेहरों की उपस्थिति से विहीन की बोर्ड एवं स्क्रीन में बदलता जाएगा। इस प्रक्रिया में मानवीय चेहरे सीधे नहीं रहेंगे। ऐसे में हमें एक वर्चुअल समुदाय की कल्पना कर उससे शैक्षणिक संवाद स्थापित करने की आदत डालनी होगी। शिक्षक भी होंगे, छात्र भी होंगे, पर दोनों स्क्रीन पर होंगे। अब शायद हमारी सामाजिकता भी काफी कुछ स्क्रीन पर टंग जाएगी, जिन्हें हम की बोर्ड से उतारेंगे और फिर स्क्रीन पर टांग देंगे।

नाम - संध्या
कक्षा - बी॰ए॰ (तृतीय वर्ष)
अनुक्रमांक - 1531420134
महाविद्यालय - दयानंद महिला महाविद्यालय (कुरुक्षेत्र)